International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 17-06-2020; Accepted: 04-07-2020; Published: 18-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 41-44

राजकीय कला महाविद्यालय नाहन की कला यात्रा

गगन दीप
(शोध छात्र), दृश्यकला विभाग, हि० प्र० विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, भारत

सारांश
हिमाचल प्रदेश में प्राचीन समय से ही कला का विशेष महत्व रहा है। वह चाहे पहाड़ी लघु कला शैली का क्षेत्र हो या आज के युग की आधुनिक कला का। दोनों ही शैलियों को राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान मिली है। हिमाचल प्रदेश में पचास–साठ के दशक से ही आधुनिक कला का विकास होना आरम्भ हुआ और निरन्तर आज भी विकास के पथ पर अग्रसर है। आधुनिक कला के इस पथ प्रदर्शन में कलाकारों व कला महाविद्यालयों का विषेश योगदान रहा है। साठ के दशक में बी. बी. सिंह भदरी जी के प्रयासों से हिमाचल प्रदेश में एक कला महाविद्यालय का उद्भव हुआ। यह उतर भारत में प्रथम ऐसा कला माहाविद्यालय था जहां पर चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य की सभी कक्षाएं एक साथ होती थी। इस महाविद्यालय में भारत के कोने–कोने से आए सभी कलाकार शिक्षक उच्च कोटी के थे जिन्होंने प्रदेश में आधुनिक कला के इतिहास को रचा। राजकीय कला महाविद्यालय नाहन का समयकाल लगभग दस वर्ष का रहा और इस कार्यकाल के दौरान प्रदेश में कला के क्षेत्र में उच्च स्तर पर कार्य हुआ। महाविद्यालय में चित्रकला, मूर्तिकला, संगीतकला व नृत्यकला की वार्षिक प्रदर्शनी व कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता था। इन आयोजनों का मुख्य उदेश्य प्रदेश में कला को बढ़ावा देना तथा लोगों में कला के प्रति रूचि उजागर करना होता था। यह महाविद्यालय बहुत जोश और उत्साह के साथ कार्य कर रहा था लेकिन धीरे–धीरे इस मविद्यालय पर काले बादल मंडराने लगे और अन्ततः राजनीतिक व भौगोलिक परिस्थितयों के कारण इसे शिमला स्थानान्तरित किया गया। शिमला में इस माहाविद्यालय को न तो सुव्यवस्थित भवन मिल सका और न ही अन्य जरूरतें पूरी हुई। परिणाम यह हुआ कि यह महाविद्यालय बिखरता चला गया। हिमाचल प्रदेश में साठ के दशक की कला यात्रा में राजकीय कला महाविद्यालय नाहन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है और आज भी इस महाविद्यालय से पढ़े कलाकार राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश का नाम रोशन कर रहे हैं।

मूल शब्द: राजकीय कला महाविद्यालय नाहन, हिमाचल प्रदेश, बी. बी. सिंह भदरी, हरीश चन्द्र राय, पहाड़ी कला, आधुनिक कला

प्रस्तावना
भारतीय आधुनिक कला की पूर्व–पीठिका बंगाल स्कूल से आरम्भ होती है। यह वह दौर था जब देश में जगह–जगह पर कला संस्थान खोले जा रहे थे। "बंगाल स्कूल से निकलकर चित्रकार भारत भर में स्थापित कला महाविद्यालयों में शैक्षिणक पदों पर पहुँचे और कला संचेतना का विकास करने लगे।"[1] ऐसे में भारतीय कला का प्रचार–प्रसार और विकास होना स्वभाविक था। भारतीय आधुनिक कला का आधार लोक कला व शास्त्रीय कला रही, इनमें भी अजन्ता, ऐलोरा, बादामी, बाघ आदि गुफाओं से भारतीय आधुनिक कलाकारों द्वारा रेखा, रूप, रंग आदि तत्वों को भारतीय आधुनिक कला में सम्माहित किया गया। देश की कला व संस्कृति को बचाने के लिए कला महाविद्यालयों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इन महाविद्यालयों से शिक्षित हुए कलाकारों ने भारत के कोने–कोने में जाकर कला का प्रचार–प्रसार किया और कला को चर्मोत्कर्ष तक पहुँचाया।

राजकीय कला महाविद्यालय नाहन की पूर्व–पीठिका
ब्रिटिश शासन के समय देश के भिन्न–भिन्न स्थानों पर हस्त कला में प्रशिक्षण देने के लिए कला विद्यालय व महाविद्यालय खोले गए। "भारतीय कलाकार तथा हस्तशिल्पी भी नवीन कला शैलियों एवं पद्धतियों को सीखने के लिए उत्सुक थे।"[2] साठ के दशक में हिमाचल प्रदेश में राजकीय कला महाविद्यालय नाहन को कॉलेज ऑफ फाईन आर्टस लखनऊ व जम्मू–कश्मीर के तर्ज पर खोला गया। "उस समय कॉलेज ऑफ फाईन आर्टस लखनऊ में व्यावसायिक कला, वास्तुशिल्प रेखांकन, धातु ढलाई, काष्ठ शिल्प, क्ले मॉडलिंग आदि कलाओं का प्रशिक्षण दिया जाता था। लखनऊ महाविद्यालय की स्थापना 1911 ई० में 'स्कूल ऑफ डिजाईन' के नाम से की गई थी।"[3]

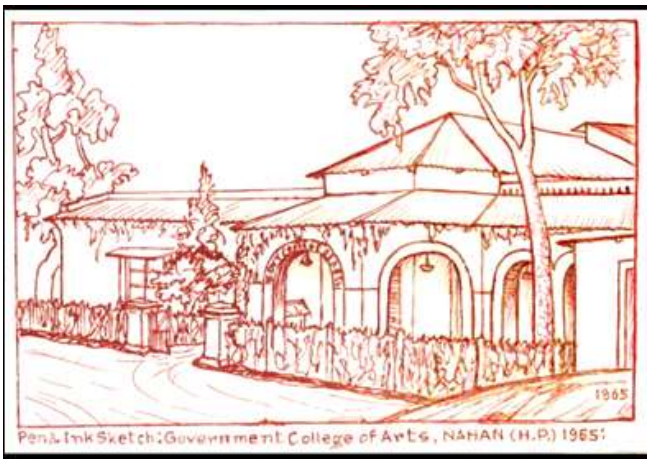

राजकीय कला महाविद्यालय नाहन का आरम्भ
"इस महाविद्यालय का आरम्भ तत्कालीन लेफिटिनेंट गवर्नर बी० बी० सिंह भदरी के प्रयासों से हुआ। राजा भदरी खुद एक कलाकार थे।"[4] उस समय प्रदेश के मुख्यमन्त्री डॉ० यश्वन्त सिंह परमार थे जिन्होंने हिमाचल प्रदेश को स्वतन्त्र पहचान दिलाई।

[1] डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ पृ. सं.–5
[2] डॉ. ममता चतुर्वेदी, समकालीन भारतीय कला (1850 ई. से वर्तमान तक) पृ. सं.–18
[3] सक्षात्कार–1 प्रो० एम सी सक्सेना
[4] सक्षात्कार–1 प्रो० एम सी सक्सेना

वहीं राजा भदरी के प्रयासों से राजकीय कला महाविद्यालय नाहन को विशेष दर्जा मिला। "राजा भदरी के प्रयासों से ही 1962 ई० में नाहन कॉलेज ऑफ आर्टस की नींव रखी गई। राजकीय कला महाविद्यालय नाहन के प्रारम्भिक दिनों में चित्रकला, मूर्तिकला, व्यवसायिक कला, गायन संगीत, वाद्य संगीत, नृत्य कला, कला अध्यापक प्रशिक्षण, क्रॉफ्टस कार्य विभाग स्थापित किया गया था।"[5]

राजकीय कला महाविद्यालय नाहन का विकास

1962 ई० में जब राजकीय कला महाविद्यालय नाहन का आरम्भ हुआ तो इस समय महाविद्याालय को सचारू रूप से चलाने के लिए प्रिंसिपल पद की आवश्यकता महसूस हुई। "उस समय प्रदेश की वर्तमान सरकार व राजा भदरी के प्रयासों से प्रिंसिपल पद के लिए विज्ञापन निकाला गया और यह प्रयास इसी वर्ष पूर्ण हुआ जब लखनऊ आर्टस कॉलेज में पढ़ा रहे प्रोफेसर हरीश चन्द्र राय को राजकीय कला महाविद्यालय नाहन का प्रिंसिपल नियुक्त किया गया। प्रोफेसर हरीश चन्द्र राय की कढ़ी मेहनत व लगन से ही इस कॉलेज में प्रथम व द्वितिय वर्ष में ही शिक्षकों की कमी को पूरा कर लिया गया।"[6] राजकीय कला महाविद्यालय नाहन उतर भारत के अग्रणी कला संस्थानों में से एक था। जहाँ पर चित्रकला, मूर्तिकला, व्यवसायिक कला, क्राफ्टस कार्य (वुड वर्क, वीवींग, लेदर वर्क आदि) के साथ–साथ संगीत (मुखरित व वाद्य) तथा नृत्यकला के विषयों को बड़े ही उत्साह के साथ आरम्भ किया गया था। इन विषयों के अतिरिक्त कॉलेज में दो वर्ष का कला अध्यापक प्रशिक्षण डिप्लोमा भी आरम्भ किया गयज्ञं

राजकीय कला महाविद्यालय नाहन के प्रमुख शिक्षक व कलाकार

"संस्थान में पहले वर्ष में प्रिंसिपल हरीश चन्द्र राय (चित्रकला), सनत कुमार चटर्जी (चित्रकला), खालिद कमल किदवई (मूर्तिकला) विषयों को पढ़ाने के लिए नियुक्त किए गये तथा द्वितीय वर्ष में जवाहर लाल शर्मा तथा महेश चन्द्र सक्सेना को क्रमशः चित्रकला व मूर्तिकला के विषय पढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया। क्राफ्टस वर्क में मिस्टर अग्निहोत्री को वुड वर्क के लिए राजस्थान से, शिव लाल तोमर को वीवींग के लिए श्रीनगर गढ़वाल से तथा लेदर वर्क के लिए संतोष गुप्ता को उतर प्रदेश से नियुक्त किया गया।"[7]

"संस्थान के आरम्भ होने के कुछ वर्ष पश्चात् किशोरी लाल सूद तथा जयदेव गुप्ता को व्यवसायिक कला विषय के पद पर नियुक्त किया गया।"[8]

"संगीत विभाग में श्री जगननाथ भार्गव (गायन संगीत), श्री नन्दलाल गर्ग, श्री कृष्ण कुमार (वाद्य संगीत तबला), श्री अग्निहोत्री (वाद्य संगीत सितार) तथा नृत्यकला में श्रीमती ईला पांडे को नियुक्त किया गया।"[9]

इस महाविद्यालय में विद्यार्थी देश के भिन्न–भिन्न स्थानों जैसे दिल्ली, मुम्बई, पंजाब, उतर प्रदेश, हिमाचल, जम्मू व कश्मीर से पढ़ने आते थे। संस्थान में पहले बेच में पाँच छात्र हाते थे तथा धीरे–धीरे छात्र–छात्राओं की संख्याँ बढती गई।

विषय एवं तकनीक

चित्रकला तेल रंग, जल रंग, चारकोल से दीवार, कार्ड बोर्ड, वॉश तकनीक से कागज व सिल्क कलॉथ पर शुद्ध भारतीय शैली में की जाती थी। मूर्तिकला को पाश्चात्य् एवं शुद्ध भारतीय शैली में सिखाया जाता था। जिसमें मिट्टी, पत्थर व धातु रूप में मूर्तियां बनाई जाती थी। संगीत कला भी शुद्ध भारतीय शैली पर आधारित थी जिसमें गायन व वाद्य दोनों ही विद्याएं थी। नृत्य कला में कथक, भरतनाट्यम् तथा पहाड़ी लोक कला पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

राजकीय कला महाविद्यालय नाहन का प्रदेश की आधुनिक कला में योगदान

यह संस्थान उतर भारत के अग्रणी संस्थानों में से एक था और अपने आप में विशेष भी। यह उस समय सम्पूर्ण भारत में मात्र एक ऐसा संस्थान था जहाँ ललित कला के सभी विषय एक ही छत के नीचे पढ़ाए जाते थे। इस महाविद्यालय से पढ़े विद्यार्थीयों ने न केवल प्रदेश बल्कि देश–विदेश में भी नाम रोशन किया। जिनमें प्रमुख हैं श्रवण कुमार खुशवाह, सुरजीत सिंह, जयदेव गुप्ता, ओम प्रकाश पुरी, सतीश कुमार, सूर्यबाला, नरेन्द्र कुमार इत्यादि हैं। इस महाविद्यायय के शिक्षकों ने भी राष्ट्रीय–अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। जिसमें प्रो० सनत कुमार चटर्जी की सबसे लम्बी पेंटिंग (110 फीट) का रिकॉड गिनिज बुक में दर्ज है। प्रो० महेश चन्द्र सक्सेना जी की मूर्तियां हिमाचल में शिमला के मॉल रोड़, बिलासपुर, चम्बा व भारत के अन्य स्थानों की शोभा बढ़ा रहें हैं। प्रो० जवाहर लाल शर्मा जी का कार्य भी विश्व स्तर पर सराहनीय रहा है। हिमाचल प्रदेश में इस संस्थान के आरम्भ होने से यहां के बेराजगार युवाओं को रोजगार के अवसर तो मिले ही लेकिन साथ–साथ पहचान भी मिली। इस महाविद्यालय का मुख्य योगदान यह रहा कि कला में रूचि रखने वाले छात्र–छात्राओं को प्रदेश में ही आधुनिक कला को जानने–समझने तथा सीखने का अवसर मिला।

[5] सक्षात्कार–2 प्रो० एम सी सक्सेना
[6] सक्षात्कार–1 प्रो० जे एल शर्मा
[7] सक्षात्कार–2 प्रो० एम सी सक्सेना
[8] सक्षात्कार–1 प्रो० जे एल शर्मा
[9] सक्षात्कार–1 प्रो० ईला पांडे

राजकीय कला महाविद्यालय नाहन का पतन

राजकीय कला महाविद्यालय नाहन बड़े उत्साह और जोश के साथ कार्य कर रहा था। लेकिन कुछ वर्षों के पश्चात् ही इस संस्थान की नींव हिलने लगी और धीरे–धीरे यह संस्थान बिखरता चला गया।

राजनीतिक कारण

"उस समय नाहन में कुछ राजनीतिक नेता संस्थान से अध्यापक–अध्यापिकाओं व छात्र–छात्राओं को अपने नीजी आवास पर संगीत व नृत्य के कार्यक्रम के लिए बुलाया करते थे। राजनेताओं के इस प्रकार के कार्यक्रम प्रिंसिपल महोदय हरीश चन्द्र राय व अन्य सभी अध्यापक वर्ग को पसंद नहीं थे। उनका मानना था कि इस तरह के कार्यक्रम से संस्थान की पढ़ाई व्यवस्था सचारू रूप से नहीं चल सकती और इस निर्णय के साथ प्रिंसिपल महोदय ने संस्थान से छात्र–छात्राओं व अध्यापक वर्ग को स्थानिय राजनेताओं के निजी कार्यक्रम में भेजना बंद कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि राजनेताओं ने सत्ता की शक्ति का इस्तेमाल किया और राजकीय कला महाविद्यालय नाहन को शिमला स्थानान्तरित कर दिया गया।"[10]

भौगोलिक कारण

जब तक नाहन में यह महाविद्यालय रहा तब तक किसी विशेष भौगोलिक परिस्थियों का सामना नहीं करना पड़ा। यहाँ का वातावरण महाविद्यालय के शिक्षकों व विधार्थियों के अनुकूल रहा। उस समय यहाँ पर न तो अधिक गर्मी होती थी और न अधिक ठंड और ऐसे वातावरण में कला का विकास होना स्वभाविक था। लेकिन महाविद्यालय के शिमला स्थानान्तरण होने के साथ ही बहुत सी मुसिबतों व उलझनों का सामना करना पड़ा। यहाँ न तो कक्षाओं को सचारू रूप से चलानें के लिए उचित स्थान मिल पाया और न वातावरण। उस समय शिमला ग्रीष्म ऋतु के लिए तो ठीक था लेकिन शीत ऋतु में यहाँ कंप–कपा देने वाली ठंड पड़ती जिस कारण कला के कार्यों (जैसे क्ले वर्क, स्टोन वर्क, क्रॉफ्टस वर्क, चित्रकला व नृत्यकला) के लिए यह मोसम ठीक न था।

स्थानीय कारण

प्राचीन समय से ही कला व कलाकारों को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ी है। जब कला महाविद्यालय नाहन में आरम्भ हुआ तो वहाँ के स्थानीय लोगों में इसके प्रति कोई विशेष उत्साह व रूचि न थी। उनका यह मानना था कि बच्चों को कला के इन विषयों में पढ़ाई करवाने से उन्हें रोजगार से वंचित रहना पड़ेगा और आज भी कहीं न कहीं यह धारणा लोगों के मन में बनी हुई है। यह भी एक कारण था जिस वजह से नाहन के स्थानीय लोगों ने महाविद्यालय के शिमला स्थानातरण के समय इसे रोकने का प्रयास नहीं किया गया और यही उलझनें शिमला में भी बनी रही। ऐसे में महाविद्यालय का पतन होना निशिचत था।

एक अन्य कारण यह भी माना जा सकता है कि इस संस्थान के शिक्षकों में कहीं न कहीं एकता की कमी भी रही। "जब कला महाविद्यालय को शिमला स्थानातरण किया गया तो संस्थान के सभी विभागों के शिक्षकों व विद्यार्थीयों को सुव्यवस्थित भवन की मांग रखनी चाहिए थी लेकिन ऐसा कुछ भी न हुआ हालांकि कुछ शिक्षकों ने कला महाविद्यालय की गरिमा को बचाए रखने तथा संस्थान में एकता बनाए रखने के लिए बेहतर प्रयास किए लेकिन सरकार पर इसका कोई विशेष प्रभाव न पड़ सका और सरकार ने भी संस्थान के विभागों को अलग–थलग कर दिया जिसमें नृत्यकला विभाग को राजकीय कन्या महाविद्यालय शिमला, कला अध्यापक प्रशिक्षण डिप्लोमा को सोलन तथा चित्रकला, मूर्तिकला व संगीतकला विभाग को लेबर हॉस्टल फागली में चलाये जाने के आदेश किये गये। धीरे–धीरे इस महाविद्यालय के सभी अंग टूटते चले गए और संस्थान ने 1979 ई० में उस समय अपनी अंतिम सांस ली जब प्रदेश सरकार ने इसे पूर्णतया बन्द कर दिया गया।"[11]

[10] सक्षात्कार–2 प्रो० जे एल शर्मा

[11] सक्षात्कार–1 प्रो० के एल सूद

परिणाम

प्रदेश में प्राचीन समय से ही कला के बीज बोये गए हैं और यह पहाड़ी कला के रूप में विकसित भी हुए और फलित भी। लेकिन आधुनिक कला का बीजारोपण 20वीं शताब्दी में होना आरम्भ हुआ। प्रदेश में आधुनिक कला के बीज तो बोये गये लेकिन पूर्णतया विकसित और फलित न हो सके जिसकी कमी आज भी महसूस होती है। नाहन कला महाविद्यालय साठ के दशक में आरम्भ हुआ। यह उतर भारत के अग्रणी संस्थानों में से एक था जहाँ पर एक ही छत के नीचे चित्रकला, मूर्तिकला, संगीतकला, नृत्यकला व व्यवसायिक कला का प्रशिक्षण दिया जाता था। इस संस्थान से बहुत से विद्यार्थीयों ने राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। प्रदेश में आधुनिक कला की समझ–परख होने लगी तथा कला प्रेमी व आम जन इसमें रूचि दिखाने लगे। यह महाविद्यालय जोश और उत्साह के साथ कार्य कर रहा था लेकिन धीरे–धीरे इसकी नींव हिलने लगी और यह बिखरता चला गया। "कला का विकास हमेशा शान्त वातावरण और प्रोत्साहन के अनुरूप होता है कला तभी फलती–फूलती है जहाँ शान्ति एवं समृद्धि हो।"[12] इस संस्थान के बंद होने के लगभग 50 वर्षों तक हिमाचल प्रदेश में ऐसा कोई भी कला महाविद्यालय नहीं खुल पाया जिससे प्रदेश की कला व संस्कृति को बढ़ावा मिल पाता। इसका खामियाजा हमें कला के क्षेत्र में राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पीछे रहकर चुकाना पड़ा। लेकिन आशा की नई किरण तब नजर आई जब प्रदेश में सन् 2015 में इसी कला महाविद्यालय की तरह जवाहरलाल ललित कला महाविद्यालय खोलने की घोषणा की गई।

निष्कर्ष

राजकीय कला महाविद्यालय नाहन के आरम्भ होने से आधुनिक कला का आरम्भ तो हुआ लेकिन पूर्णतः विकास न हो सका। नाहन के आस–पास के क्षेत्रों में कला का प्रचार–प्रसार भी हुआ लेकिन प्रादेशिक स्तर पर कुछ कमी रह गई। स्थानीय लोगों द्वारा न तो नाहन में और न ही शिमला में इसे बचाने के लिए कोई कदम बढ़ाए गए। इस संस्थान के शिक्षकों को भी चम्बा, धर्मशाला, बिलासपुर, संजोली, शिमला, सोलन स्थानातरित किया गया। ऐसे में कला शिक्षकों व कला विद्यार्थीयों को न तो पढ़ाई के लिए उचित स्थान मिल सका और न ही सोहार्दपूर्ण वातावरण। नतीजा यह हुआ कि कला की जो मशाल जलाई गई थी वह बुझ गई और धुआं और राख ही रह गया।

संदर्भ सूचि

1. गोस्वामी, डॉ. प्रेमचन्द्र, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. चतुर्वेदी, डॉ. ममता, समकालीन भारतीय कला (1850 ई. से वर्तमान तक), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
3. डॉ. शकुन्तला मौर्य, कम्पनी चित्रकला (उतर प्रदेश के सन्दर्भ में), स्वाति पब्लिकेशन, दिल्ली।

[12] डॉ. शकुन्तला मौर्य, कम्पनी चित्रकला पृ. स.–10